प्रथम वर्ष

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रश्न पत्र	प्रस्तावित कालखण्ड	बाह्य मूल्यांकन	आन्तरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
1.	बाल्यावस्था एवं बाल विकास (Childhood and Development of Children)	1	120	70	30	100
2.	समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा (Education in Contemporary Indian Society)	2	120	70	30	100
3.	पूर्व बाल्यावस्था–परिचर्या एवं शिक्षा Early Childhood Care and Education (Pre-primary and Primary Education)	3	120	70	30	100
4.	भाषा बोध एवं प्रारम्भिक भाषा विकास (Understanding Language and Early Language Development)	4	60	25	25	50
5.	पाठ्यचर्या में शिक्षण सम्प्रेषण तकनीकी का एकीकरण (Pedagogy and Information and Communication Technology ICT)	5	120	50	50	100
6.	Proficiency in English	6	60	25	25	50
7.	योग शिक्षा Yoga Education (First Year)	7	60	25	25	50
8.	मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा शिक्षण (Pedagogy of Mother Tongue/ Regional Language) (अ) हिन्दी भाषा शिक्षण (Hindi Language Teaching) (ब) संस्कृत (Sanskrit Teaching) (स) मराठी (Marathi Teaching) (द) उर्दू (Urdu Teaching)	8	120	70	30	100
9.	Pedagogy of English	9	120	70	30	100
10.	गणित शिक्षण (प्राथमिक तथा पूर्व प्राथमिक विद्यालय के लिये) Pedagogy of Mathematics Education (For Early Primary and Primary School)	10	120	70	30	100
	योग			545	305	850

प्रथम वर्ष

व्यावहारिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रश्न पत्र	प्रस्तावित कालखण्ड	बाह्य मूल्यांकन	आन्तरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
1.	स्व बोध (Towards Self-Understanding)	1	16	50	50	100
2.	रचनात्मक नाटक, ललित कला और शिक्षा (Creative Drama, Fine Art and Education)	2	10	25	25	50
3.	बच्चों का शारीरिक-भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा (Children's Physical-Emotional Health and Health Education)	3	10	25	25	50
4.	इण्टर्नशिप (शाला स्थानबद्ध कार्यक्रम) (Teaching Practice and School Internship)	—	24 दिन	50	50	100
	योग			150	150	1150
	(सैद्धान्तिक + व्यावहारिक) महायोग			695	455	1150

पाठ्यक्रम : प्रथम वर्ष

प्रथम प्रश्न पत्र : बाल्यावस्था एवं बाल विकास

उद्देश्य—(1) बच्चों और बचपन के बारे में आम धारणा की समीक्षा करना (खासतौर से भारतीय समाज के सन्दर्भ में), बचपन पर असर डालने वाली विभिन्न सामाजिक/शैक्षिक/सांस्कृतिक वास्तविकताओं की संवेदनशील और आलोचनात्मक समझ विकसित करना। (2) बच्चे के शारीरिक, गत्यात्मक (Motor), सामाजिक एवं भावनात्मक विकास के विभिन्न पहलुओं पर समझ विकसित करना। (3) सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ में विविध क्षमताओं वाले बच्चों के विकास की प्रक्रिया को समझना। (4) बच्चों के साथ रूबरू बातचीत करने के तौके उपलब्ध कराना और बच्चों के विकास के पहलुओं को समझने की विधियों पर प्रशिक्षण देना।

इकाई 1 : विकास सम्बन्धी दृष्टिकोण—(1) बाल विकास का परिचय—वृद्धि, विकास एवं परिपक्वता की अवधारणा, विकास के सम्बन्ध में विविध दृष्टिकोण की अवधारणा एवं परिचय, मानविकी मनोविज्ञान एवं विकासात्मक सिद्धान्त। (2) बाल विकास के अध्ययन की स्थायी विषयवस्तु—बहुआयामी एवं बहुलता रूप में विकास, जीवन काल में सतत् रूप से विकास, विकास पर सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव। (3) बाल विकास के अध्ययन के लिये विभिन्न प्रविधियाँ— प्रकृतिवादी अवलोकन, साक्षात्कार, विशिष्ट झलकियाँ एवं वर्णात्मक कथाएँ, पियाजे का बाल विकास का सिद्धान्त। (4) बच्चों की समावेशी शिक्षा—अवधारणा और प्रविधियाँ।

इकाई 2 : शारीरिक-गत्यात्मक विकास—(1) शारीरिक-गत्यात्मक विकास, वृद्धि एवं परिपक्वता। (2) शारीरिक-गत्यात्मक विकास के लिये अवसर उपलब्ध कराने में अभिभावक एवं शिक्षकों की भूमिका; जैसे—खेल आदि।

इकाई 3 : भाषा, सामाजिक एवं भावात्मक विकास—बोलना एवं भाषा विकास—(1) पूर्व भाषायी सम्प्रेषण। (2) भाषा विकास की अवस्थाएँ। (3) भाषा विकास के स्रोत—घर, शाला एवं मीडिया। (4) भाषा के उपयोग—संवाद एवं वार्तालाप में बच्चों की बातचीत को सुनना। (5) संवाद में सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नताएँ— उच्चारण। (6) सम्प्रेषण के विभिन्न तरीके और कहानी कहना। **सामाजिक विकास**—(1) सामाजिक विकास में परिवार, सहपाठियों एवं स्कूल की भूमिका। (2) सामाजिक विकास में स्पर्धा, अनुशासन, पुरस्कार एवं दण्ड की भूमिका। (3) संवेगों की आधारभूत समझ, गुस्सा, डर, चिन्ता, खुशी आदि। (4) संवेगों का विकास, संवेगों के कार्य, बाल्वी का लगाव सिद्धान्त।

इकाई 4 : समाजीकरण का सन्दर्भ—(1) समाजीकरण की अवधारणा एवं प्रक्रियाएँ। (2) समाजीकरण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक भिन्नताएँ। (3) परवरिश, परिवार तथा वयस्क एवं बच्चों के बीच सम्बन्ध, पालन पोषण के तरीके, बच्चों का अभिभावकों से अलग रहना, झूलाघरों में रहने वाले बच्चे, अनाथालय। (4) स्कूलिंग : शिक्षक का बालक के साथ सम्बन्ध एवं शिक्षक की भूमिका। (5) सहपाठियों के साथ सम्बन्ध : साथी मित्रों के साथ सम्बन्ध, स्पर्धा एवं सहयोग, बचपन के दौरान उग्रता एवं शरारत। (6) सामाजिक सिद्धान्त एवं लैंगिक

(जेण्डर) विकास : लिंग आधारित भूमिकाओं का आशय, लिंग आधारित भूमिकाओं पर प्रभाव, रूढ़िवादिता, खेल के मैदान में लिंग (पहचान) का प्रभाव। (7) शाला त्यागी की समस्या।

इकाई 5 : बचपन—(1) बालश्रम, बाल शोषण, गरीबी, वैश्वीकरण, विद्यालय से गैरहाजिरी की समस्या एवं वयस्क संस्कृति के सन्दर्भ में बचपन। (2) बचपन की धारणा में समानताएँ एवं विविधताएँ और खास तौर से भारतीय सन्दर्भ में किस तरह बचपन पनपते हैं?

द्वितीय प्रश्न पत्र : समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा

उद्देश्य—(1) अवधारणाओं, विचारों और सरोकारों के अन्तर-विषयक विश्लेषण से परिचित होना। (2) भारतीय समाज के सामाजिक-राजनैतिक आर्थिक आयामों से परिचित कराना और इसकी विविधता की सराहना। (3) समसामयिक भारतीय समाज में व्याप्त एवं प्रचलित मुद्दे और प्रस्तुत चुनौतियों की समझ विकसित करना। (4) भारतीय समाज की उपलब्धियों, लगातार बनी रहने वाली समस्याओं और प्रस्तुत चुनौतियों को समझने की दिशा में विशिष्ट राजनैतिक संस्थानों, आर्थिक नीतियों और सामाजिक संरचनाओं के बीच सम्बन्धों को समझना।

इकाई 1 : राज्य, राजनीति एवं भारतीय शिक्षा—(1) राज्य एवं शिक्षा। (2) शिक्षा की राजनैतिक प्रकृति। (3) नव आर्थिक सुधार एवं शिक्षा पर उनका प्रभाव। (4) सार्वजनिक शिक्षा बनाम निजी शिक्षा। (5) सार्वजनिक शिक्षा का निजीकरण। (6) हाशियाकृत (Marginalised) एवं सामाजिक रूप से वंचितों की शिक्षा। (7) भारत में शिक्षा के अवसरों की समानता लाना।

इकाई 2 : समाज एवं शालेय शिक्षा का परिप्रेक्ष्य—(1) भारत में वर्ग, जाति, धर्म, परिवार एवं राजनीति के विशेष सन्दर्भ में सामाजिक संरचना एवं शिक्षा। (2) संस्कृति एवं शिक्षा। (3) आधुनिकीकरण, सामाजिक बदलाव एवं शिक्षा।

इकाई 3 : भारतीय संविधान एवं शिक्षा—(1) स्वतन्त्र भारत की संवैधानिक दृष्टि : तब और अब। (2) संविधान एवं शिक्षा : शिक्षा की समवर्ती स्थितियाँ, शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान। (3) विशिष्ट सन्दर्भों से जुड़े बच्चे (जाति, धर्म, भाषा एवं लिंग) और शिक्षा से सम्बन्धित नीतियाँ, अधिनियम एवं प्रावधान। (4) प्रारम्भिक शिक्षा की विभिन्न शैक्षिक नीतियाँ एवं उनका क्रियान्वयन एवं प्रभाव। (5) भारतीय संविधान में समता एव न्याय, भेदमूलक शाला प्रणाली (Differential school) एवं समान पड़ोस शाला (Common neighbour school) प्रणाली का विचार। (6) शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 एवं मध्य प्रदेश नियम, 2011.

इकाई 4 : शिक्षा में समकालीन मुद्दे और सरोकार—(1) लोकतन्त्र एवं शिक्षा। (2) उदारीकरण एवं शिक्षा। (3) वैश्वीकरण एवं शिक्षा। (4) खेतिहर, दलित एवं नारीवादी आन्दोलन और शिक्षा पर उनके प्रभाव। (5) समानता, निष्पक्षता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लोकतन्त्रीयकरण।

इकाई 5 : सामाजिक बदलावकर्त्ता के रूप में शिक्षक—(1) एक चेतनशील बुद्धिजीवी के रूप में शिक्षक। (2) शिक्षक की भूमिका एवं दायित्व। (3) शिक्षक नैतिकता। (4) शिक्षक एवं सामुदायिक विकास। (5) सामाजिक बदलावकर्त्ता के रूप में शिक्षक।

तृतीय प्रश्न पत्र : पूर्व बाल्यावस्था—परिचर्या एवं शिक्षा

उद्देश्य—(1) जीवन पर्यन्त सीखने और विकास के आधार के रूप में प्रारम्भिक बचपन के वर्षों की परिभाषा और महत्त्व को समझना। (2) पूर्व, मध्य एवं पश्च बचपन के वर्षों में बालक के गुणों, विकास की जरूरतों के अनुसार संवेदनाओं का विकास करना और प्राथमिक शिक्षा में उसका क्रियान्वयन करना। (3) विकास के सन्दर्भ में उपयुक्त प्रारम्भिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) की पाठ्यचर्या और विद्यालयीन शिक्षा के लिये उसके महत्त्व एवं सिद्धान्तों एवं विधियों को समझना। (4) प्रारम्भिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) में घर पर रहकर सीखने (Home school) और समुदाय से जुड़ाव के महत्त्व को समझना।

इकाई 1 : प्रारम्भिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की परिभाषा, प्रकृति एवं महत्त्व—(1) प्रारम्भिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की समग्र पाठ्यचर्या की परिभाषा एवं उद्देश्य। (2) जीवन पर्यन्त सीखने एवं विकास में प्रारम्भिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) को महत्त्वपूर्ण अवधि के रूप में महत्त्व जानना। (3) अधिगम को सुगम बनाने के लिये प्रारम्भिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की अवधि को आठ साल की उम्र तक बढ़ाने सम्बन्धी तर्क। (4) विद्यालयों में प्रारम्भिक अधिगम की चुनौतियाँ एवं शाला पूर्व तैयारी की अवधारणा।

इकाई 2 : विकास की दृष्टि से समुचित प्रारम्भिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) पाठ्यक्रम के सिद्धान्त और विधियाँ—(1) बच्चे कैसे सीखते हैं : प्रारम्भिक, मध्य एवं बाद के बचपन तक अवस्थावार विशिष्टताएँ। (2) प्रारम्भिक वर्षों में सीखने के लिये खेल एवं गतिविधि आधारित शिक्षण का महत्त्व। (3) बच्चों के समग्र विकास के क्षेत्र एवं गतिविधियाँ। (4) प्रारम्भिक वर्षों में साक्षरता एवं अंक ज्ञान।

इकाई 3 : बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की पाठ्यचर्या की योजना एवं प्रबन्धन—(1) सुसंगठित एवं सन्दर्भयुक्त पाठ्यचर्या की योजना के सिद्धान्त। (2) दीर्घ एवं अल्पकालिक उद्देश्य एवं योजना। (3) परियोजना विधि एवं विशिष्ट कार्यक्षेत्र केन्द्रित उपागम (Approach)। (4) विकास की दृष्टि से उपयुक्त एवं समावेशी कक्षा प्रबन्धन।

इकाई 4 : बच्चों की प्रगति का आकलन—(1) प्रारम्भिक बचपन में सीखने एवं विकास के मापदण्ड। (2) बच्चों की प्रगति का अवलोकन एवं उसका अभिलेखीकरण। (3) बच्चों की प्रगति का प्रतिवेदन। (4) घर और शाला के बीच जुड़ाव सुनिश्चित करना।

चतुर्थ प्रश्न पत्र : भाषा बोध एवं प्रारम्भिक भाषा विकास

उद्देश्य—(1) भाषा की प्रकृति एवं संरचना से प्रतिभागियों को परिचित कराना। (2) भाषा के कार्यों के प्रति जागरूक बनाना। (3) प्राथमिक कक्षाओं में स्कूली पाठ्यक्रम के वृहद् परिप्रेक्ष्य में भाषा के महत्त्व, उसके अधिग्रहण तथा अधिगम को समझना। (4) विभिन्न भाषायी कौशलों एवं उनके विकास के तरीकों को समझना। (5) भाषा, विचार एवं समाज के अन्तर्सम्बन्धों को समझना। (6) साहित्य की विभिन्न विधाओं की प्रकृति, उनके शिक्षण के उद्देश्य तथा अधिगम के तरीकों को समझना। (7) व्याकरण को पाठ्यवस्तु के साथ रचनात्मक तरीके से जोड़ने हुए पढ़ाने के तरीकों को समझना। अच्छा शिक्षणशास्त्र वही होता है जो विषय की प्रकृति, शिक्षार्थी और उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक सन्दर्भों को ध्यान में रखते हुए संयोजित किया जाय।

इकाई 1 : भाषा क्या है—(1) परिचय। (2) भाषा, विचार और समाज। (3) पशु एवं मानव सम्प्रेषण के बीच अन्तर। (4) भाषा की विशेषताएँ, भाषा के कार्य। (4) भाषा और उसमें निहित शक्ति।

इकाई 2 : भाषाई विविधता और बहुभाषिकता—(1) भाषा के बारे में संवैधानिक प्रावधान। (2) बहुभाषिकता की प्रकृति और कक्षा में इनका प्रभाव। (3) भाषाई विविधता—भारत एवं मध्य प्रदेश के सम्बन्ध में। (4) बहुभाषिकता—कक्षा संसाधन और रणनीति के रूप में।

इकाई 3 : भाषा अधिग्रहण और भाषा सीखना—(1) परिचय। (2) भाषा और बच्चे। (3) अधिग्रहण और सीखना। (4) प्रथम भाषा अधिग्रहण। (5) द्वितीय भाषा और विदेशी भाषाओं को सीखना।

इकाई 4 : भाषा की कक्षा—(1) परिचय। (2) भाषा शिक्षण के उद्देश्य (Aims and objectives)। (3) भाषा शिक्षण के वर्तमान तरीके और उनका विश्लेषण। (4) शिक्षक की भूमिका। (5) त्रुटियों की भूमिका।

इकाई 5 : भाषाई कौशल क्या हैं (1)—(1) परिचय। (2) सुनना-सुनने से तात्पर्य। (3) बोलना—बोलने से तात्पर्य। (4) सुनने और बोलने के कौशल का विकास—संवाद, लघु नाटक, कहानी सुनाना, कविता सुनाना।

इकाई 6 . भाषाई कौशलों का विकास (2)—(1) परिचय। (2) साक्षरता और पढ़ना—पढ़ने से तात्पर्य। (3) वर्णनात्मक पाठ्यवस्तु को पढ़ना—पाठ्यवस्तु को समझना, आलेख का विस्तार करना, पठित सामग्री को अपने अनुभव से जोड़ना, नये अनुभवों को आलेख में शामिल करना, पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त भी विविध सामग्री को पढ़ पाना। (1) पढ़ने की रणनीतियाँ—पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद की रणनीतियाँ। (5) भाषा के विविध साधनों की समझ, बच्चों को अच्छा पाठक बनाना। (6) लेखन एक कौशल? (7) पढ़ने और लिखने के बीच का सम्बन्ध। (8) लेखन कौशल का विकास करना, मौलिक लेखन कर पाना। (9) साहित्य की विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित साहित्यिक उदाहरण दिये जायें जिससे कि पढ़ाना आसान हो।

इकाई 7 : साहित्य—(1) पाठ्य पुस्तक के प्रकार—कथात्मक और वर्णात्मक साहित्य से परिचय, उन्हें पढ़कर समझना, पाठ्यवस्तु के साथ सम्बन्ध स्थापित करना। (2) साहित्य की विभिन्न विधाओं के शिक्षण के उद्देश्य। (3) साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़कर समझना। (4) सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में साहित्य का प्रयोग कर पाना। (5) गद्य एवं पद्य को पढ़ने की विधियाँ—व्याकरण—रचनात्मक तरीके।

इकाई 8 : पाठ्य पुस्तक एवं उसके शिक्षण शास्त्र की समझ—(1) भाषा की पाठ्य पुस्तकों के निर्माण के लिये मार्गदर्शक सिद्धान्त। (2) विषयवस्तु एवं उसके शिक्षण के तरीके। (3) पाठ्य पुस्तक में दी गई विषयवस्तु, उसके शिक्षण के तरीके, इकाईयों की रूपरेखा, अभ्यास कार्य की प्रकृति और उसकी बारीकियों का विश्लेषण। (4) अकादमिक मापदण्ड और सीखने के तरीके। (5) भाषा की कक्षा में शिक्षण सहायक सामग्री।

इकाई 9 : कक्षा शिक्षण की योजना एवं आकलन—(1) कक्षा शिक्षण की तैयारी—भाषा की कक्षाओं की वार्षिक एवं कालखण्डवार कार्य योजना बनाना। (2) आकलन सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में अन्तर (CCE)। (3) भाषा की कक्षा में रचनात्मक आकलन (पढ़ने-लिखने का आकलन)। (4) भाषा की कक्षा में योगात्मक आकलन (कौशल आधारित)।

पंचम् प्रश्न पत्र : पाठ्यचर्या में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का एकीकरण

उद्देश्य—(1) स्कूल शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की आवश्यकता समझना। (2) अधिगम प्रक्रियाओं में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के प्रयोग के माध्यम से अधिगम को प्रभावी बनाना। (3) विषय में छात्र मूल्यांकन/आकलन हेतु विभिन्न सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी माध्यमों को बढ़ावा देना। (4) विभिन्न विषयों में उपलब्ध सूचना एवं तकनीकी सॉफ्टवेयर एवं टूल्स के उपयोग को बढ़ावा देना। (5) उपलब्ध मुक्त शैक्षिक संसाधनों को उपयोग करना। (6) शिक्षक को सूचना एवं सम्प्रेषण तकनकी के उपयोगकर्त्ता के तौर पर योग्य, कुशल एवं संवेदनशील बनाना जिससे कि वह उचित समय पर उचित तकनीकी का प्रयोग कर सके।

इकाई 1 : स्कूल शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी आधार—शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी—परिभाषा, अर्थ एवं भूमिका—(1) शिक्षा में कम्प्यूटर। हार्डवेयर— डाटा स्टोरेज, डाटा बैकअप। सॉफ्टवेयर—सिस्टम सॉफ्टेवयर (विण्डोज, लिनक्स, एन्ड्रॉइड) एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर (वर्ड, पावर पॉइन्ट, एमएस एक्सेस)। (2) इण्टरनेट और इण्ट्रानेट—खोज करना, चयन करना, डाउनलोड करना, अपलोड करना। (3) दस्तावेज निर्माण और प्रस्तुतीकरण—टेक्स्ट दस्तावेज निर्माण, स्प्रेडशीट निर्माण, पावर पॉइन्ट निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण (स्लांइड, चार्ट, कार्टून, चित्र के साथ)। (4) मुक्त शैक्षिक संसाधन (ओईआर)—क्यों, उद्देश्य एवं महत्त्व, नेशनल रिपोजीटरी ऑफ ओईआर। (5) ओईआर फॉर स्कूल्स—एचबीसीएसई, टीआईएफआर, एमकेसीएल एवं आई-कोन्सेट का संयुक्त प्रयास, अन्य जैसे—स्कूल फार्ज, ओपेन सोर्स एडुकेशन फाउण्डेशन, नेशनल सेण्टर फॉर ओपेन सोर्स दण्ड एडुकेशन तथा फ्लॉसएड, ऑर्ग।

इकाई 2 : सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया—(1) मस्तिष्क आधारित अधिगम (बीबीएल)। (2) ई-लर्निंग एवं ब्लैंडेड लर्निंग। (3) एल 3 समूह रचना, कॉपरेटिव एवं कोलोब्रेटीव अधिगम। (4) फ्लिप्ड एवं स्मार्ट क्लासरूम, इण्टरेक्टिव व्हाइट बोर्ड। (5) सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी समर्थित अधिगम के वैकल्पिक तरीके—पैकेज (काई/सीएएल पैकेज, मल्टीमीडिया पैकेज, ई-कंटेंट, एमओओसी), सोशल मीडिया (मोबाइल, ब्लॉग, विकी, व्हाट्सएप, चैट आदि)। (6) आभासी प्रयोगशाला (वर्चुअल लैब)—अर्थ एवं भूमिका। (7) सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित अधिगम संसाधन निर्माण (एडुकाप्ले आदि द्वारा)।

इकाई 3 : सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आकलन/मूल्यांकन—(1) सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी समर्थित आकलन/मूल्यांकन के वैकल्पिक तरीके—ई-पोर्टफोलियो, कम्प्यूटर आधारित प्रश्न बैंक आदि। (2) आकलन रुब्रिक के निर्माण के लिये ऑनलाइन रुब्रिक जेनेरेटर; जैसे—आरयूबीआईएसटीआर, आईआरयूबीआरआईसी। (3) सूचना एवं सम्प्रेषण

तकनीकी आधारित आकलन/मूल्यांकन टूल (एसओसीआरएटीआईसीई, पीआईएनजीपीओएनजी, सीएलएएसएस, बीएडीजीईएस, सीएलएएसएसएमवीईआर आदि)। (4) सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित परीक्षण निर्माण टूल्स (एचओटीपीओटीएटीओ, एसयूआरवीईवाईएमओए केईवाई, जीआओएलई, एफओआरआरएम आदि)।

इकाई 4 : विषय आधारित वेबसाइट एवं सॉफ्टवेयर एवं उपयोग—(1) भौतिक विज्ञान आधारित—फीजिओन, ब्राइट स्टोर्म, कॉम, नासा वर्ल्ड वाइड। (2) रसायन विज्ञान आधारित—पिरियोडिक टेबिल क्लासिक, वालजियम। (3) मेथ्स आधारित—जियो जेबा, मैथ्सइसफन, सेज मैथ्स, खानाएकदेमी, ओआरजी, टूवस मैथ्स। (4) समाज विज्ञान आधारित—सेलास्टिक, जी कॉपरिस, वर्ल्ड वाइड टेलेस्कोप, जी कोम्प्रिस। (5) भाषा आधारित—ब्राइट स्टोर्म, कॉम। (6) अन्य (नॉलेज, एडवेंचर, माइंड जीनियेस, डिज्नी इंटरेक्टव एवं लर्निंग कम्पनी, थिंकिंगब्लोक्स)। (7) कार्यशालाओं के माध्यम से। (8) करके सीखने के अवसर देना।

षष्ठम प्रश्न पत्र : Proficiency in English

Objectives–(1) To strengthen the student-teacher's own English language proficiency. (2) To brush up their knowledge of grammatical, lexical and discourse systems in English. (3) To enable students to link this with pedagogy. (4) To re-sequence units of study for those who may have no knowledge of English.

Unit 1 : Status of English in India–(1) English as a global language. (2) English as a language of science and technology. (3) English as a library language.

Unit 2 : Listening and Speaking–Phonetics and phonology–How sounds are produced, transmitted and received, stress, rhythm and intonation in pronunciation.

Unit 3 : Reading–(1) Importance of reading. (2) Reading strategies–work attack, inference, extrapolation.

Unit 4 : Writing–(1) Mechanics of writing–strokes and curves, capital and small letters, cursive and print script, punctuation. (3) Different forms of writing–formal and informal letters, messages, motives, posters, advertisements, note making, report writing, diary entry, resume (biodata/CV) writing. (3) Controlled and guided writing with verbal and visual inputs. (4) Free and creative writing.

Unit 5 : Vocabulary and Grammar in Context–(1) Synonyms, antonyms, homophones. (2) Word formation–prefix, sufix, compounding. (3) Parts of speech. (4) Tense, modals, (5) Articles, determiners. (6) Types of sentences (assertive, interrogative, imperative, exclamatory).

सप्तम प्रश्न पत्र : योग शिक्षा

उद्देश्य—(1) छात्र-शिक्षकों में जीवन की गुणवत्ता विकसित करने के लिये योग व्यवहारों

के सिद्धान्तों की समझ पैदा करने हेतु। (2) उचित योग आसन को प्रदर्शित करने की योग्यता विकसित करना जिससे शारीरिक एवं मानसिक दशा विकसित हो और भावनात्मक सन्तुलन बना रहे। (3) युवाओं की मनोवैज्ञानिक क्रियाओं को विकसित करने में मदद करना जैसे जागरूकता, एकाग्रता एवं इच्छा शक्ति। (4) युवाओं में सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करना। (5) भारतीय संस्कृति में उन व्यवहारों के लिये सम्मान विकसित करना जो अर्थपूर्ण एवं प्रासंगिक शैक्षिक रणनीतियों का समर्थन करती है। (6) आदर्श सामाजिक जीवन एवं ताकत का विकास करने के लिये अवसरों का निर्माण करना। (7) योग दर्शन की दार्शनिक अवधारणाओं के बारे में एक व्यापक विचार विकसित करना। (8) मानव जीवन के लिये योग की अवधारणा एवं व्यवहार में इसके आशय को समझना। (9) योग की अवधारणा को समझना एवं योग के विभिन्न सिद्धान्तों को व्यवहार में प्रदर्शित करना। (10) पतञ्जलि, अरबिन्दो एवं भगवद्गीता के योग सिद्धान्तों के विषय में एक अन्तरदृष्टि विकसित करना। (11) योग व्यवहार के उपचारात्मक महत्त्व के बारे में एक सम्पूर्ण विचार प्राप्त करना। (12) योग सिद्धान्त एवं इसकी आध्यात्मिक पवित्रता के बारे में अन्तरदृष्टि प्राप्त करना।

इकाई 1 : योग का परिचय—(1) योग का अर्थ एवं परिभाषा, योग का क्षेत्र, योग के उद्देश्य, योग के प्रकार (भक्ति योग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, हठयोग, मन्त्रयोग, लययोग, कुण्डलिनी योग), योग एवं व्यायाम में अन्तर, योग के पूरक व्यायाम—सूक्ष्म यौगिक क्रियाएँ, शिक्षक एवं विद्यार्थियों के लिये योग का महत्त्व। (2) योग का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य—पतञ्जलि से पूर्व में योग की स्थिति (सिन्धु घाटी की सभ्यता, वैदिककाल, उपनिषद्काल, रामायणकाल, महाभारतकाल), सांख्य और योग, जैन धर्म एवं योग, बौद्ध धर्म एवं योग।

इकाई 2 : पतञ्जलि के समय और पतञ्जलि के पश्चात् योग का विकास—(1) महर्षि पतञ्जलि द्वारा योग का सुव्यवस्थीकरण, अष्टांग योग का परिचय—नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, महर्षि पतञ्जलि का योग के क्षेत्र में योगदान। (2) पतञ्जलि के पश्चात् योग का विकास—योग के विभिन्न ग्रन्थों का सामान्य परिचय—योगसूत्र, घेरण्डसंहिता, हठयोग प्रदीपिका, आधुनिक युग में योग का पुनर्जागरण। (3) योग के क्षेत्र में विभिन्न योग संस्थाओं का योगदान; जैसे—कैवल्यधाम, लोनावाला, बिहार योग विद्यालय मुंगेर, स्वामी विवेकानन्द योग अनुसन्धान संस्था बैंगलोर, दिव्य जीवन संघ शिवानन्द आश्रम ऋषिकेश, मोरार जी देसाई राष्ट्रीय योग अनुसन्धान संस्थान नई दिल्ली, केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसन्धान परिषद् नई दिल्ली, पतञ्जलि योगपीठ हरिद्वार।

इकाई 3 : योग एवं ध्यान की अन्य महत्त्वपूर्ण प्रणालियाँ—(1) ध्यान का अर्थ, प्रकार एवं लाभ, ध्यान में उपयोगी एवं बाधक तत्त्व। (2) पंचकोष की अवधारणा, भगवद्गीता और योग, यान योग—(गीता अध्याय 6 में वर्णित श्लोक संख्या 10 से श्लोक संख्या 36 तक की व्याख्या) जपध्यान, अजपध्यान, पतञ्जलि के आधार पर ध्यान पद्धति। (3) प्रेक्षा ध्यान अर्थ और उद्देश्य, विपश्यना ध्यान का अर्थ और उद्देश्य।

इकाई 4 : शरीर रचना विज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव—(1) शारीरिक तन्त्रों पर योग का प्रभाव—परिसंचरण तन्त्र, कंकाल तन्त्र, पाचन तन्त्र, श्वसन तन्त्र, तन्त्रिका तन्त्र, उत्सर्जन तन्त्र। (2) अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का परिचय एवं उन पर योग का प्रभाव। (3) मानसिक स्वास्थ्य, चिन्ता, अवसाद, तनाव कम करने में योग की भूमिका।

अष्टम प्रश्न पत्र : हिन्दी भाषा शिक्षण

उद्देश्य—(1) हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं संरचना से छात्राध्यापकों को परिचित कराना। (2) स्कूली पाठ्यक्रम के वृहद् परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा के महत्त्व, उसके अधिग्रहण तथा अधिगम को समझना। (3) हिन्दी भाषा के विभिन्न कौशलों एवं उनके शिक्षण के उद्देश्य तथा अधिगम के तरीकों को समझना। (4) हिन्दी भाषा की विषयवस्तु में व्याकरण के रचनात्मक प्रयोग करना।

इकाई 1 : हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य और कक्षा प्रतिक्रिया—(1) हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य। (2) माध्यम भाषा/प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी का स्वरूप। (3) हिन्दी भाषा का अधिग्रहण और उस सन्दर्भ में कक्षा की प्रतिक्रिया। (4) शिक्षण की भूमिका।

इकाई 2 : हिन्दी भाषा शिक्षण के कौशल—(1) सुनना और इस कौशल से क्या आशय है। (2) हिन्दी भाषा की कक्षा में सुनना कौशल का विकास सम्बन्धी गतिविधियाँ। (3) बोलने के कौशल का आशय। (4) हिन्दी भाषा कक्षा में बोलना कौशल के विकास के लिये गतिविधियाँ (गीत, कविता, संवाद, सम्भाषण, वीडियो, सिनेमा)।

इकाई 3 : भाषा शिक्षण के कौशल—(1) पढ़ना कौशल से तात्पर्य। (2) हिन्दी भाषा कक्षा में पढ़ने के कौशल से सम्बन्धित गतिविधियाँ—विषयवस्तु का चयन, वाचन पश्चात् अपने अनुभव से जोड़ना—विभिन्न प्रकार की पठनीय सामग्री का वाचन कर उसका आनन्द उठाना। (3) हिन्दी भाषा की कक्षा में पढ़ने के कौशल के विकास के लिये रणनीति—पढ़ने के पूर्व और पढ़ने के बाद की गतिविधियाँ। (4) लेखन के कौशल से तात्पर्य। (5) हिन्दी भाषा की कक्षा में लेखन कौशल के विकास के लिये गतिविधियाँ।

इकाई 4 : गद्य और पद्य शिक्षण—(1) गद्य और पद्य शिक्षण के उद्देश्य। (2) हिन्दी भाषा की कक्षा, लेख, व्यंग, निबन्ध आदि शिक्षण की पाठ योजना बनाना और कक्षा की प्रतिक्रिया।

इकाई 5 : व्यावहारिक व्याकरण—(1) कक्षा के स्तरानुसार व्याकरण तत्त्व का रचनात्मक पद्धति से शिक्षण। (2) व्याकरण के खेल/गतिविधि।

इकाई 6 : मूल्यांकन—(1) हिन्दी भाषा कक्षा का रचनात्मक मूल्यांकन। (2) हिन्दी भाषा की कक्षा में योगात्मक मूल्यांकन। (3) आकलन/मूल्यांकन का रखरखाव, टीप लिखना, फीडबैक।

अष्टम प्रश्न पत्र (वैकल्पिक) : संस्कृत भाषा शिक्षण

उद्देश्य—(1) छात्राध्यापकों में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि एवं समझ जागृत करना। (2) संस्कृत भाषा के भाषायी कौशलों का विकास करना। (3) छात्राध्यापकों को संस्कृत भाषा की शब्दावली, व्याकरण, शुद्ध उच्चारण एवं लेखन से परिचित कराना (रचनात्मक तरीकों से)। (4) संस्कृत साहित्य के अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करना एवं लेखन एवं संवाद कौशल को बढ़ावा देना। (5) छात्राध्यापकों के संस्कृत व्याकरण ज्ञान एवं उनके व्याकरण के प्रयोग कौशल में वृद्धि करना। (6) छात्राध्यापकों को संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं; यथा—काव्य, कथा, गद्य आदि का विकास कर सकने योग्य बनाना। (7) संस्कृत भाषा की संरचना को रटे

बिना समझना (समझ विकसित करना)। (8) संस्कृत माध्यम में शिक्षण की चुनौतियों को समझना। (9) संस्कृत के प्राचीन एवं आधुनिक साहित्यकारों लोक साहित्यकारों की कृतियों से परिचित कराना।

इकाई 1 : संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं कक्षा प्रक्रियाएँ—(1) संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य। (2) द्वितीय भाषा के रूप में संस्कृत की कक्षा का स्वरूप। (3) भाषा का अधिग्रहण और इसके सन्दर्भ में कक्षा की प्रक्रियाएँ। (4) द्वितीय भाषा के शिक्षण के रूप में संस्कृत शिक्षक की भूमिका।

इकाई 2 : भाषा शिक्षण के कौशल—सुनना—(1) सुनने का तात्पर्य। (2) संस्कृत की कक्षा में श्रवण कौशल के विकास की गतिविधियाँ। (3) बोलने का तात्पर्य। (4) संस्कृत की कक्षा में बोलने के कौशल के विकास की गतिविधियाँ (संस्कृत गीत, कहानी, संवाद, सम्भाषण आदि के द्वारा)।

इकाई 3 : भाषा शिक्षण के कौशल—पढ़ना—(1) पढ़ना यानी क्या? (2) संस्कृत की कक्षा में पठन गतिविधियाँ—पाठ्य पुस्तक को संस्कृत माध्यम से पढ़ना, पढ़कर उसे अनुभवों से जोड़ना, विविध तरह की पाठ्य सामग्री को पढ़कर उसका आनन्द ले पाना। (3) संस्कृत की कक्षा में पढ़ने की रणनीतियाँ—किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने से पूर्व, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद अपनायी जाने वाली रणनीतियाँ। (4) लिखना यानी क्या? (5) संस्कृत की कक्षा में बच्चों को मौलिक लेखन के कौशल के विकास हेतु की जाने वाली गतिविधियाँ।

इकाई 4 : गद्य एवं पद्य शिक्षण—(1) गद्य एवं पद्य शिक्षण के उद्देश्य। (2) संस्कृत की कहानी, आलेख, निबन्ध आदि को पढ़ाने की पाठ योजना एवं कक्षा प्रक्रियाएँ। (3) संस्कृत की कविता, गीत, श्लोक आदि को पढ़ाने की पाठ योजना एवं कक्षा प्रक्रियाएँ।

इकाई 5 : व्यावहारिक व्याकरण—(1) कक्षानुसार व्याकरण के तत्त्वों को रचनात्मक तरीके से पढ़ाने के तरीके। (2) व्याकरण के खेल/गतिविधियाँ।

इकाई 6 : मूल्यांकन—(1) संस्कृत की कक्षा में रचनात्मक (मौलिक/लिखित) मूल्यांकन। (2) संस्कृत की कक्षा में योगात्मक मूल्यांकन। (3) मूल्यांकन/आकलन के दस्तावेजों का सन्धारण, टिप्पणी लेखन, फीड बैक।

नवम् प्रश्न पत्र : Pedagogy of English (For Primary)

Objectives–(1) Equip student-teachers with s theoretical perspective on English as 'Second Language' (ESL). (2) Enable student-teachers to grasp general principles in language learning and teaching. (3) To understand young learners and their learning context. (4) To grasp the principles and practice of unit and lesson planning for effective teaching of English. (5) To develop classroom management skills; procedures and techniques for teaching language. (6) To examine and develop resources and materials and there usage with young learners for language teaching and testing. (7) To example issue in language assessment and their impact on classroom teaching.

Unit 1 : Teaching of English at the Elementary Level–(1) Isssues of learning English in a multilingual, multicultural society. (2) Issues of teaching English as second language at (a) Early primary–Class I and II, (b) Primary class III, IV and V. (3) Learner socio-cultural background and need learning English.

Unit 2 : Understanding of Textbooks and Approaches to the Teaching of English–(1) The cognitive and constructive approach–nature and tole of learner, catering to different types of learners, age of learning, learning style, teaching large classes, socio-cultural pace factors and socio-psychological factors. (2) Behaviouristic approach–direct method, grammar-translation method, structural approval, communicative approach, state specific methods–activity based learning (ABL) and active learning methodology (ALM). The internal assessment will be done on the following two sub sections.

Unit 3 : Classroom Transaction Process–(1) Stating learning outcomes and achieving them. (2) Pair work, group work. (3) Use of story telling, role play, drama, songs of pedagogical tools. (4) Pre-reading, reading post reading, objectives and processes. (5) Questioning to promote thinking. (6) Dealing with textual exercises.

The interal assessment will be done on the following section–(A) Prepapring teaching plan (five) using constructive approach and including at least three of the following activities–(1) Pair work. (2) Group work. (3) Story telling. (4) Role play. (5) Drama. (6) Songs/rhymes. (7) Questioning to promote thinking. (B) Peer analysis of the lesson plan. (C) Suggested ICT activities–(1) Searching and downloading lesson plan based on constructive approach. (2) Edit, moderate and contextalize at least one lesson plan. (3) Present lesson plan digitally (on LCD projection or on smartphone).

Unit 4 : Curriculum, Textbook and Material Development–(1) Preparing material for young learners. (2) Using local resources. (3) Using open resource (OER's) text, video, audio. (4) Analyzing and receiving teaching learning materials and OER's. (5) Academic standards, learning indicators and learning outcomes. (6) Need and process of curriculum revision. (7) Text analysis of school textbooks for English.

Unit 5 : Planning and Assessment–(1) Planning for teaching. (2) Year plan, unit plan and period plan. (3) Teachers' reflection on their own teaching learning practices. (4) Continuous and comprehensive evaluation (CCE). (5) Monitoring of learning and giving feed back.

दशम प्रश्न पत्र : गणित शिक्षण (पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक के लिये)

उद्देश्य—छात्राध्यापकों को (1) प्राथमिक स्तर के गणित के विषय क्षेत्र पर अपनी गहरी समझ विकसित करने योग्य बनाना। (2) उन घटकों के प्रति जागरूक करना जो गणित सीखने की प्रक्रिया पर प्रभाव डालते हैं। (3) उन तरीकों के बारे में संवेदनशील बनाना जिस तरीकों से छात्र गणितीय ज्ञान के प्रति अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। (4) कौशल विकास, गहरी अन्तर्दृष्टि पैदा करने, उपयुक्त सोच हासिल करने एवं बच्चों के प्रभावी तरीके से सीखने को प्रोत्साहित करने के

लिये कारगर रणनीतियों की समझ विकसित करने में मदद करना। (5) अर्थपूर्ण तरीके से गणित सीखने और पढ़ाने के लिये आत्मविश्वास का निर्माण करना। (6) मुख्यत: संख्या और स्थान (Space) से सम्बन्धित गणितीय अवधारणाओं और पढ़ाने के दौरान बच्चों के साथ इसका प्रयोग करने के कौशल और समझ को विकसित करना। (7) गणितीय तरीके से सोचने और तर्क कर सकने के योग्य बनाना। (8) अवधारणाओं को उसकी तार्किक परिणति तक ले जा पाये और कक्षा में छात्रों के साथ इसका प्रयोग कर पाने योग्य बनाना। (9) बच्चों के लिये उचित गतिविधियों को डिजाइल कर सकने में ज्ञान एवं कौशल में समर्थ बनाना।

इकाई 1 : गणित से परिचय—(1) गणित क्या है और जीवन में यह कहाँ-कहाँ है? (2) हम गणित क्यों पढ़ाते हैं? (3) दैनिक जीवन में गणित की क्या आवश्यकता एवं महत्त्व है? (4) गणित के आयाम : अवधारणा, प्रक्रिया, प्रतीक एवं भाषा। (5) गणितीकरण।

इकाई 2 : गणित—शिक्षण सिद्धान्त और शिक्षण विधियाँ—(1) सीखने वाले को समझना। (2) सीखने की प्रक्रिया को समझना। (3) सीखने एवं शिक्षण की त्रुटियाँ। (4) गणित सीखने एवं सिखाने की विधियाँ—आगमनात्मक और निगमनात्मक (Induction and deduction), विशिष्टीकरण एवं सामान्यीकरण, गणित के सिद्धान्त।

इकाई 3 : गणना, संख्याएँ एवं उनकी संक्रियाएँ—(1) संख्या पूर्व अवधारणाएँ। (2) संख्या की समझ एवं प्रस्तुति। (3) अंक और संख्या। (4) गणना और स्थानीय भान। (5) भिन्न की अवधारणा और उसकी प्रस्तुति। (6) संख्याओं और गणितीय संक्रियाएँ।

इकाई 4 : ज्यामितीय आकार एवं पैटर्न—आकृतियों के प्रकार—द्विविमीय एवं त्रिविमीय (2डी और 2डी)। (1) आकृतियों की समझ—परिभाषा, आवश्यकता और अन्तर। (2) गणित में विभिन्न आकारों की समझ। (3) पैटर्न—परिभाषा, आवश्यकता और प्रकार। (4) संख्याओं और आकृतियों की समझ।

इकाई 5 : पाठ्य पुस्तकों औ शिक्षा शास्त्र की समझ—गणित की पाठ्य पुस्तकों के विकास के लिये दार्शनिक और मार्गदर्शी सिद्धान्त। (1) गणित शिक्षण के लिये विषयवस्तु, दृष्टिकोण तथा विधि—संवादमूलक और सहभागी तरीका, एक सुविधादाता के रूप में शिक्षक। (2) विषय (Theme), इकाई की संरचना, अभ्यास की प्रकृति और उसके प्रभाव। (3) अकादमिक मानक और सीखने के संवेदक। (4) गणितीय पाठ्यचर्या के प्रभावी अन्तरण (Transaction) के लिये अधिगम स्रोत (Learning resources)।

इकाई 6 : कक्षा योजना एवं आकलन (मूल्यांकन)—(1) शिक्षण तैयारी : गणित शिक्षण के लिये योजना, वार्षिक योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना। (2) योजना का आकलन (मूल्यांकन)। (3) आकलन एवं मूल्यांकन—परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्त्व। (4) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन/आकलन (CCE)—अधिगम के लिये आकलन, अधिगम का आकलन, रचनात्मक आकलन एवं उपकरण, योगात्मक आकलन, भारिता टेबल (वैटेज टेबल), पृष्ठपोषण एवं रिपोर्टिंग, रिकार्ड एवं रजिस्टर।

शिक्षण अभ्यास एवं शाला इण्टर्नशिप

औचित्य एवं उद्देश्य—शिक्षण अभ्यास के अन्तर्गत शाला आधारित गतिविधियों के प्रारूप

की रचना की जाती है ताकि छात्राध्यापक (Student-teacher) सैद्धान्तिक विषयों से व्यावहारिक रूप से जुड़ सकें तथा उसे शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के परिप्रेक्ष्य में मदद मिल सकें और प्राप्त पूर्व ज्ञान और अभ्यासों की क्रमबद्ध संरचना उनके शिक्षण को प्रभावशाली रूप में सक्षम बना सकें। शाला इण्टर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे अपने मैंटर्स/सहपाठियों की कक्षा शिक्षण प्रक्रिया का अपवलोकन करें जिससे उनमें छात्रों के व्यवहार, अनुदेशात्मक अभ्यास, छात्र अधिगम वातावरण और कक्षा प्रबन्धन के प्रति अन्तर्दृष्टि विकसित हो सके। छात्राध्यापकों से आशा की जाती है कि वे अभ्यास के दौरान समालोचनात्मक चिन्तन एवं विचार-विमर्श करें और अपने को शाला के अभिलेखों के रखरखाव, पाठ योजनाओं के निर्माण, इकाई योजना के निर्माण, तकनीकी (ICT) का उपयोग करते हुए कक्षा प्रबन्धन, शाला समुदाय पालक के हस्तक्षेपों से सम्बन्धित गतिविधियों में संलग्न रखकर स्वयं के विकास एवं शिक्षण अभ्यास के व्यावसायीकरण पर चिन्तन करें।

शाला आधारित गतिविधियों के अन्तर्गत इण्टर्नशिप कार्यक्रम के दौरान किया जाने वाला अत्य प्रमुख कार्य पाठ योजनाओं एवं इकाई योजनाओं का प्रस्तुतीकरण है जिसके लिये प्रथम एवं द्वितीय वर्ष में अलग से निर्दिष्ट किया गया है।

इण्टर्नशिप अवधि के दौरान की गयी समस्त गतिविधियों को पोर्टफोलियो एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल में प्रस्तुत किया जायेगा। छात्राध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे इण्टर्नशिप के दौरान अपने द्वारा की गयी समस्त गतिविधियों के अनुभवों का, अवलोकनों का एवं निष्कर्षों का रिकॉर्ड सन्धारित करेंगे। रिफ्लेक्टिव जर्नल में की गयी प्रविष्टियाँ विश्लेषणात्मक होनी चाहिये; जैसे—पूर्व समझ के आधार पर क्या नया और भिन्न है, क्यों उसके द्वारा निर्देशों के आधार पर किये गये कुछ अवलोकन, कक्षा प्रबन्धन, शिक्षक पालक संघ से समानता या भिन्नता रखते हैं। ये अवलोकन कैसे आलोचना पर आधारित होना चाहिये जिससे उसके अभ्यास में परिवर्तन आ सके। प्रत्येक छात्राध्यापक (इण्टर्न) का आकलन उसके द्वारा बनाये गये पोर्टफोलियो एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल में की गयी प्रविष्टि के आधार पर किया जायेगा।

शाला इण्टर्नशिप कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राध्यापक को यह अवसर उपलब्ध कराना है कि अभ्यासकर्त्ता के रूप में उसे अर्थपूर्ण शिक्षण अनुभव प्राप्त हो सके। इस धारणा के आधार पर शाला इण्टरर्नशिप की योजना इस प्रकार बनायी जाये जिसमें शाला तथा शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के मध्य भागीदारी (Partnership) हो सके। छात्राध्यापक को शालेय गतिविधि में एक नियमित शिक्षक की तरह सक्रिय भागीदारी करते हुए स्वयं को शाला के सभी कार्यों से जोड़ना चाहिये परन्तु इसके साथ यह प्रावधान भी होना चाहिये कि एक अभ्यासकर्त्ता के रूप में उसकी भूमिका रचनात्मक हो। इण्टर्नशिप शाला के द्वारा उसे आवश्यक भौतिक स्थान के साथ-साथ नवाचार हेतु शैक्षणिक स्वतन्त्रता भी दी जानी चाहिये। यह आवश्यक है कि प्रस्तावित पार्टनरशिप मॉडल द्वारा इण्टर्नशिप शाला को भी प्राप्त होने वाले लाभों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए चयनित किया जाय।

यह कार्यक्रम पूर्णत: क्षेत्र आधारित है इसमें छात्राध्यापकों को सीधे समस्याओं से जूझते हुए सीखने का अनुभव मिलेगा। इण्टर्नशिप कार्यक्रम के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये छात्राध्यापकों

को एक चिन्तनशील शिक्षक के रूप में ज्ञान के आधार पर बच्चों से जुड़ने, बच्चों के प्रति उसकी समझ और कक्षागत प्रक्रिया, सैद्धान्तिक शैक्षणिक विचारों, रणनीतियों एवं कौशलों को क्रम से विकसित करने की आवश्यकता होगी तभी छात्राध्यापक को कक्षा में पढ़े गये सैद्धान्कि विचारों को शाला में परखने के अवसर मिलेंगे।

शाला इण्टर्नशिप एक द्विवर्षीय कार्यक्रम है। प्रत्येक वर्ष में छात्राध्यापकों से अलग-अलग अपेक्षाएँ हैं। प्रथम वर्ष में छात्राध्यापक का परिचय शाला से, शाला के वातावरण से, बच्चों को समझने से तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को समझने से होगा। द्वितीय वर्ष में छात्राध्यापक एक नियमित शिक्षक की भाँति कार्य करेगा। यहाँ शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के अकादमिक सुपरवाइजर संवाद और चर्चा के आधार पर मार्गदर्शन और फीडबैक देकर उसकी सहायता करेंगे।

विशिष्ट उद्देश्य—(1) बच्चों और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का व्यवस्थित रूप से अवलोकन करेगा। (2) बच्चों से सामंजस्य और संवाद बनाना। (3) बच्चों के विकास और शैक्षणिक दृष्टिकोण के सन्दर्भ में शाला की पाठ्य पुस्तकों और अन्य संसाधसन सामग्री का समीचनात्मक मूल्यांकन करना। (4) विभिन्न स्रोत सामग्री का ऐसा विविध संग्रह विकसित करना जिसे छात्राध्यापक बाद में अपने शिक्षण के दौरान प्रयोग कर सकें; जैसे—पाठ्य पुस्तक, बाल साहित्य, खेल और गतिविधियाँ, भ्रमण इत्यादि। (5) किसी एक अधिगम केन्द्र पर जाकर अभ्यास पर समालोचनात्मक चिन्तन करना। (6) कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों के शिक्षण में सहभागिता करना।

कार्यक्रम के निम्न घटकों से उपरोक्त उद्देश्यों को प्रस्तावित अधिभार के साथ प्राप्त किया जा सकता है।

* बाल प्रोफाइल विकसित करना —10%
* पाठ्य पुस्तकों और अन्य सामग्रियों का समालोचनात्मक विश्लेषण करना —15%
* स्रोत सामग्री का विकास —30%
* छात्रों के साथ बातचीत करना और उनका अवलोकन करना —30%
* अधिगम केन्द्र का भ्रमण और रिपोर्ट करना —15%

प्रथम वर्ष

इण्टर्न करेंगे—

शाला इण्टर्नशिप—शिक्षक प्रशिक्षकों के लिये निर्देश

(1) शाला की एवं शाला के विद्यार्थियों की विशिष्ट विशेषताओं को समझने के लिये प्रोफाइल तैयार करें। प्रोफाइल सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, अभिरुचि, विशेष अधिगम आवश्यकताओं, स्वास्थ्य का स्तर, मध्याह्न भोजन, स्कूल स्वास्थ्यवर्द्धक कार्यक्रम और बुनियादी ढाँचे के आधार पर तैयार की जाये। इस प्रोफाइल का स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के सत्रगत कार्य के रूप में मूल्यांकन किया जायेगा।

(2) कक्षा में प्रयोग करने से पहले किसी एक स्रोत सामग्री (पाठ्य पुस्तक सहित) का समालोचनात्मक विश्लेषण करें। पाठ विश्लेषण में लिंग, धर्म, जाति और समुदाय की रूढ़िवादी सोच के आधार पर आकलन किया जाये।

(3) अपनी सामग्री की रिपोर्ट स्वयं विकसित करें जिसमें बाल साहित्य, किताबें, प्रकाशक, संसाधन और विचार शामिल होना चाहिये।

(4) किसी वैकल्पिक शाला में जा कर वहाँ के अभ्यासों का समालोचनात्मक अध्ययन करें, जो कक्षा कक्ष एवं शाला पर्यावरण के मुद्दों पर केन्द्रित हो; जैसे—मनोवैज्ञानिक, भौतिक एवं सामाजिक, बच्चों से बातचीत, शिक्षकों का शिक्षण अभ्यास। वैकल्पिक रूप से ऐसे संस्थानों में कार्यरत लोगों को आमन्त्रित कर उनकी सहायता लेकर उन संस्थानों की डाक्यूमेण्ट्री और AV फिल्म भी दिखायी जा सकती है।

(5) विद्यार्थियों से बातचीत कर योजना बनायें और उसे लागू करें। एक कक्षा में 2 इण्टर्न को रखा जा सकता है। जब एक इण्टर्न बच्चों के साथ बातचीत करे तो दूसरा उसे देखे और अपने अवलोकन को जर्नल में अंकित (Record) करे। परच्य सम्पर्क सत्र (Post Contact Sesjkljksion) के दौरान लगभग आधी बातचीत का रिकार्ड सुपरवाइजर द्वारा आवश्यक रूप से अवलोकन किया जाय। जर्नल इण्टर्न द्वारा सन्धारित किया जाय जिससे उसे स्वयं को समझने में मदद मिलेगी तथा अधिगमकर्त्ता और सामाजिक सन्दर्भ के प्रति उसकी रूढ़िवादी सोच का पता चलेगा।

मूल्यांकन—मूल्यांकन विकसात्मक प्रकृति का हो जो स्पष्ट रूप से इण्टर्न की प्रगति पर केन्द्रित होना चाहिये। जैसे प्रत्येक अवलोकन के माध्यम से औसत अंक (1/10, 3/10, 8/10) देने के बजाये सुझावात्मक टिप्पणी इण्टर्न की प्रोफाइल में जुड़ती चली जायें। यह प्रक्रिया बाद में स्वयं इण्टर्न के अभ्यास का हिस्सा बन जायेगी।

प्रथम वर्ष

व्यावहारिक पाठ्यक्रम

1. स्व बोध

प्रथम कड़ी—इस कड़ी में छात्राध्यापकों द्वारा लेखन कार्य किया जायेगा। लेखन कार्य निम्नलिखित दो तरीकों से किया जा सकता है—

1. दैनन्दिनी लेखन—इसके अन्तर्गत छात्राध्यापक नियमित दैनन्दिनी लिखेंगे। दैनन्दिनी के बिन्दु स्पष्ट हों। यह दैनन्दिनी दिनचर्या एवं अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों के कारण दिनचर्या एवं स्वयं के व्यवहार में आने वाले परिवर्तनों एवं अनुभवों पर आधारित हो।

दैनन्दिनी लेखन के उद्देश्य—(1) छात्राध्यापकों के जीवन के अनुभवों, घटनाओं के अवलोकन तथा मन में उठने वाले विचारों एवं मुद्दों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिये सजग करना। इस प्रकार उनमें चिन्तनशीलता और आत्म समीक्षात्मक चिन्तन को विकसित करना। (2) छात्राध्यापकों और संकाय सदस्यों के बीच अन्तःसंवाद स्थापित करना और इस तरह उनमें व्यक्तित्व का विकास करना। (3) प्रत्येक छात्राध्यापक द्वारा नियमित दैनन्दिनी लिखी जायेगी। इसमें वे दिनांक डालते हुए निम्नलिखित विषयों पर अपने अनुभव लिखेंगे—(अ) अपने जीवन में होने वाली किसी विशिष्ट घटनाओं जैसे कोई पुरस्कार प्राप्ति, किसी विशिष्ट व्यक्ति से मुलाकात, कोई पढ़ी गयी पुस्तक आदि पर अपनी प्रतिक्रिया लिखेंगे। (ब) समसामयिक विषय या मुद्दे पर अपने विचार लिखना। (स) किसी शैक्षिक समस्या जिसका वे सामना कर रहे हों उस पर अपने विचार लिखना। (द) संस्था में हुए किसी विशिष्ट आयोजन पर लेख लिखना। प्रत्येक 15 दिन में किसी संकाय सदस्य द्वारा संस्थान में दैनन्दिनी पढ़ी जायेगी और प्रत्येक दैनन्दिनी पर अपनी टीप अंकित कर छात्राध्यापक को वापस की जायेगी। सत्र के अन्त में सभी छात्राध्यापकों से उनकी दैनन्दिनी समग्र मूल्यांकन के लिये ले ली जायेगी और संस्था में दैनन्दिनी सहित मूल्यांकन का अभिलेख रखा जायेगा।

2. अन्य लेखन—इसके अन्तर्गत अपने जीवन से सम्बन्धित अनुभवों का लेखन कार्य किया जायेगा।

अन्य लेखन कार्य के उद्देश्य—(1) छात्राध्यापकों को अपनी शैक्षणिक यात्रा की याद दिलाना, जिसके अन्तर्गत उनके विद्यालय, शिक्षक, शैक्षिक वातावरण आदि शामिल होंगे जिससे उनकी आकांक्षाएँ और उम्मीदों ने एक स्वरूप ग्रहण किया। इन विषयों पर चिन्तन करते हुए अपने अनुभव और अभिमत लिखना। (2) एक समय अन्तराल के बाद अर्थात् डी.एल.एड. के एक वर्ष पूर्ण होने पर अपनी स्थिति और परिवेश पर लिखना। (3) आपके जीवन में क्या परिवर्तन आया, उसे लिखना। उपर्युक्त आधार पर अपने अनुभवों को व्यक्त करना।

प्रथम वर्ष के सत्रारम्भ में प्रत्येक छात्राध्यापक द्वारा अपनी 'शैक्षिक आत्मकथा' लिखी जायेगी। सत्रान्त पर अपने नवीन अध्ययन और अनुभव के आधार पर अपने अनुभवों और आकांक्षाओं पर आलेख तैयार किया जायेगा। संकाय सदस्यों द्वारा इन पर चर्चा होगी। आलेखों को सत्रान्त में लिया जायेगा। संस्था में आलेख और समग्र मूल्यांकन का अभिलेख रखा जायेगा।

द्वितीय कड़ी—इस कड़ी में साल भर कार्यशालाओं और संगोष्ठियों की एक श्रृंखला आयोजित की जायेगी। कार्यशाला एवं संगोष्ठी के विषय एवं थीम इस तरह रखे जायेंगे कि उसमें सभी छात्राध्यापक अपनी सहभागिता करें।

कार्यशाला और सेमिनार के सामान्य उद्देश्य—"शिक्षक वही पढ़ाते हैं जो वह जानते हैं और वही सिखाते हैं जो उनके व्यक्तित्व में है।" इस कथन का तात्पर्य यह है कि अन्य व्यवसायों कर तुलना में शिक्षक के व्यवसाय में सफलता तभी होती है जब शिक्षक का व्यक्ति बहुआयामी और सुदृढ़ हो। शिक्षा और शिक्षण में शिक्षक के धैर्यवान, विवेकशील, सजग और सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। अतः शिक्षक की आत्म समीक्षा और आत्मावलोकन द्वारा अपने व्यक्तित्व विकास के अवसर प्राप्त होने चाहिये। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये कार्यशाला एवं सेमिनार आयोजित किये जायेंगे।

कार्यशाला के विषय—कार्यशालाएँ निम्नलिखित छह विषयों पर आयोजित किये जायेंगे।

(1) फिल्म, कला, थियेटर और सीखना

उद्देश्य—(1) फिल्म, नाटक और कला के विविध रूपों से परिचित होना और उनके शैक्षणिक महत्त्व को जानना। (2) देखे गये फिल्म, नाटक और कला की समीक्षा करना। (3) दृश्य माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण विकसित करना। (4) विभिन्न कला रूपों की सराहना करना। उन मापदण्डों को समझना जिनसे एक कला रूप सार्थक होता है। (5) अशाब्दिक सम्प्रेषण के माध्यमों को समझना और स्वयं उनका प्रयोग करना। (6) हिन्दी के अभ्यास से स्वयं की शरीर भंगिमाओं और शारीरिक गतियों में सामंजस्य स्थापित करना सीखना। इसी माध्यम से शारीरिक सन्तुलन तथा अपनी आवाज के उतार-चढ़ाव पर नियन्त्रण करना सीखना।

गतिविधियाँ—(1) शैक्षिक महत्त्व की फिल्म और नाटक देखना और उनकी समीक्षा करना। (2) फिल्म या नाटक के किसी एक दृश्य का विश्लेषण करना। (3) रेखांकन चित्रकला आदि दृश्य माध्यमों को देखना और स्वयं उनमें से किसी एक को बनाना। (4) थिएटर गेम्स में भाग लेकर शरीर सन्तुलन, शारीरिक गति में सामंजस्य और आपसी सहयोग की भावना को विकसित करना। (5) नाटक के संवादों को बोलकर तथा स्वयं नाटक में भाग लेकर स्वर नियन्त्रण सीखना। इस प्रकार सम्प्रेषण के कौशल को विकसित करना।

(2) जेण्डर और परवरिश

उद्देश्य—(1) सामाजिक जीवन में जेण्डर भिन्नता के कारकों को पहचानना। (2) भारतीय समाज में जेण्डर भिन्नता के कारकों को पहचानना। (3) जेण्डर आधारित विभेद और उनके कुप्रभावों को जानना और उनके समाधानों को खोजना।

गतिविधियाँ—(1) छात्राध्यापकों द्वारा अपने जीवन के जेण्डर भिन्नता और विभेद उदाहरण प्रस्तुत करना। (2) विभिन्न परिवारों में (जैसे निम्नवर्ग, ग्रामीण क्षेत्र आदि) बड़े होते बच्चों में जेण्डर भिन्नता और विभेद पर चर्चा करना और अपनी राय बनाना। (3) विद्यालयों में जेण्डर विभेद की केस स्टडी करना। (4) समाज में जेण्डर विभेद की केस स्टडी करना।

(3) प्रतिष्ठित व्यक्तियों के बारे में विस्तार से जानना—प्रतिष्ठित व्यक्ति जैसे स्वामी रामतीर्थ, आदि शंकराचार्य, आदि कवि वाल्मीकि, तुलसीदास, मीराबाई, रैदास आदि के बारे में जानना।

उद्देश्य—(1) व्यक्तियों के जीवन के माध्यम से व्यापक सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित होना। (2) स्वयं के सांस्कृतिक मूल की खोज करना।

गतिविधियाँ—(1) प्रमुख व्यक्तियों की कृतियों को पढ़ना और उन पर समूहों में चर्चा करना। (संकाय सदस्य छात्राध्यापकों को समूह में एक-एक सांस्कृतिक व्यक्तित्व के बारे में खोजने और जानने का कार्य दे सकते हैं।) (2) सांस्कृतिक व्यक्तियों की जयन्तियाँ मनाना। उनकी रचनाओं का पाठ/गायन करना। उन पर विचार-विमर्श करना। (3) किसी एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व पर आलेख लिखना।

(4) जीवन की प्रमुख घटनाएँ एवं अनुभव—

उद्देश्य—(1) छात्राध्यापकों को उन प्रमुख कारकों के प्रति सजग करना जिससे उनके जीवन का स्वरूप निर्धारित हुआ। (2) छात्राध्यापकों के द्वारा स्वयं के जीवन की किसी प्रमुख घटना या अनुभव को आज के सन्दर्भ में परखना। (3) छात्राध्यापकों द्वारा उनके एक-दूसरे के जीवन की घटनाओं या अनुभवों को जानना और उनसे सीख लेना।

गतिविधियाँ—(1) छात्राध्यापक अपने जीवन की प्रमुख घटनाओं और अनुभवों का समय आरेख (Time line), मानस चित्रण (Mind map), पोस्टर या अन्य किसी तरीके से व्यक्त करेंगे। (2) छात्राध्यापक अपने जीवन की किसी एक प्रमुख घटना या अनुभव पर केन्द्रित होकर विचार करेंगे कि (i) घटना/अनुभव कैसा था? (ii) घटना/अनुभव का क्या प्रभाव उनके जीवन पर पड़ा? (iii) आज के सन्दर्भ में उस घटना/अनुभव का क्या महत्त्व है? (3) छात्राध्यापक समूहों में घटना/अनुभव को साझा कर उन पर बातचीत करेंगे। (4) जीवन के प्रमुख घटनाओं/अनुभवों का सार लिखेंगे।

3. कार्यशाला स्वयं की पहचान—प्रथम—शरीर—स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण, शरीर, ज्ञानेन्द्रियाँ एवं पाँच प्राण।

उद्देश्य—(1) स्वयं के शरीर (स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण) के प्रति परिचित होना। (2) शरीर के निर्माण तत्त्वों (महाभूतों) एवं उनके गुणों से परिचित होना। (3) स्वयं की ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों के प्रति समझ विकसित करना। (4) जड़ एवं चेतन तत्त्वों (पदार्थों) के प्रति समझ विकसित करना। (5) स्वयं के श्वास/प्रश्वास अर्थात् प्राणों के बारे में समझ विकसित करना।

गतिविधियाँ—विद्यार्थी स्वयं के व्यक्तित्व का विश्लेषण कर स्वयं की सकारात्मक विशेषताओं के साथ कमजोरियों की सूची बनाते हुए स्वयं में क्रमशः होने वाले सकारात्मक परिवर्तनों का विवरण लिखें (SWOT)।

कार्यशाला स्वयं की पहचान—द्वितीय—अवस्थाओं—जागृत, स्वप्न एवं सुषुप्ति, पञ्च कोष—अन्नमय, प्राणमय, मनामय, विज्ञानमय, आनन्दमय कोष, आत्म तत्त्व की समझ।

उद्देश्य—(1) छात्राध्यापकों को स्वयं की जागृत, स्वप्न एवं सुषुप्ति के प्रति समझ विकसित करना। (2) छात्राध्यापकों को स्वयं का शरीर किन-किन कोषों से बना है इन कोषों के प्रति समझ विकसित करना। (3) छात्राध्यापकों में मैं कौन हूँ की समझ विकसित करना। (4) छात्राध्यापकों में आत्म तत्त्व की सर्वोत्कृष्ट प्रियता की समझ विकसित करना।

गतिविधियाँ—(1) छात्राध्यापकों को स्वयं की जागृत अवस्था का निरीक्षण करें। यह पता लगायें कि जागृत अवस्था को जानने वाला कौन है। (2) छात्राध्यापकों को स्वयं की स्वप्न अवस्था का निरीक्षण करें। यह पता लगायें कि स्वप्न अवस्था को जानने वाला कौन है। (3) छात्राध्यापकों को स्वयं की सुषुप्ति (गहरी नींद) का निरीक्षण कर गहरी नींद के अनुभवों को लिखें। यह पता लगायें कि सुषुप्ति (गहरी नींद) को जानने वाला कौन है। (4) छात्राध्यापक तीनों अवस्थाओं अर्थात् जागृत, स्वप्न एवं सुषुप्ति का एक साथ विश्लेषण कर यह पता लगायें कि इन तीनों अवस्थाओं को जानने वाले तीन अलग-अलग हैं या एक ही है। इन अवस्थाओं को जानने वाला जड़ है या चेतन है। अन्त में यह निष्कर्ष निकालें कि 'मैं कौन हूँ'। (5) छात्राध्यापकों को अपने जीवन में धन, परिवार, शरीर एवं स्वयं का अनुभव है। इनसे यह निष्कर्ष निकालें कि सबसे प्रिय (अन्तिम प्रिय) कौन है।

संगोष्ठी के विषय—सगोष्ठी निम्नलिखित चार विषयों पर आयोजित किये जायेंगे।

1. भारत में विभिन्न प्रकार के बच्चों की झलक—ग्रामीण, शहरी, श्रमिक, सुदूर पहाड़ी क्षेत्र, विभिन्न राज्यों के बच्चे आदि।

स्वरूप—छात्राध्यापक विभिन्न आयामों से विवरणों, चित्रों, पोस्टर, अखबार, पत्रिका में प्रकाशित आलेखों आदि। भारत में विभिन्न प्रकार के बच्चों औ उनकी परिवरिश पर प्रस्तुतीकरण देंगे।

तैयारी—संकाय सदस्य अपने निर्देशन में छात्राध्यापकों को स्रोत सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। छात्राध्यापकों को किसी एक प्रकार के बच्चों पर प्रस्तुतीकरण के लिये तैयार किया जायेगा।

2. समाज में विज्ञान और धर्म की भूमिका—विभिन्न धर्मों जैसे सनातन धर्म, मुस्लिम धर्म, ईसाई धर्म, जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म आदि के लक्षण, स्वरूप एवं सद्गुण।

स्वरूप—चर्चा और विमर्श

तैयारी—संकाय सदस्य छात्राध्यापकों को विषय से सम्बन्धित पाठ्य सामग्री उपलब्ध करायेंगे। विषय से सम्बन्धित कोई थीम देकर छात्राध्यापकों के से चर्चा, विमर्श आदि आयोजित करेंगे।

3. भारत में प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा का स्वरूप

स्वरूप—चर्चा और विमर्श

तैयारी—संकाय सदस्य छात्राध्यापकों को विषय से सम्बन्धित पाठ्य सामग्री उपलब्ध करायेंगे। छात्राध्यापकों को समूहों में विषय सम्बन्धित अलग-अलग थीम देकर चर्चा, विमर्श, वाद-विवाद आयोजित करेंगे।

4. प्रमुख शिक्षाविदों के (महात्मा गाँधी, श्री अरबिन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर, गिजूभाई बधेका) शैक्षिक चिन्तन

स्वरूप—चर्चा और विमर्श

तैयारी—छात्राध्यापकों द्वारा किसी एक शिक्षाविद के विचारों पर प्रस्तुतीकरण किया जायेगा। इस पर अन्य छात्राध्यापक एवं संकाय सदस्य प्रश्न करेंगे जिनका उत्तर छात्राध्यापक देंगे।

2. रचनात्मक नाटक, ललित कला और शिक्षा

इकाई 1 : नाटक की अवधारणा, प्रकार, गतिविधियाँ, कार्य योजनाएँ—

रचनात्मक नाटक : महत्त्वपूर्ण क्षेत्र—(1) जीवन को समझना। जीवन से सीखना, इसके अन्याय के लिये शिक्षक द्वारा गतिविधियों का आयोजन करना और बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव से गुजारना। (2) सामाजिक विभिन्नताओं एवं विषमताओं एवं विशेषताओं को पहचानना और दूसरों के सन्दर्भ में स्वयं को रखकर देख पाना। (3) अपने अवलोकन को पैना बनाना और समान परिस्थिति को विभिन्न दृष्टिकोण से देखने की क्षमता विकसित करना। (4) सामान्य दिखायी देने वाली परिस्थितियों को व्यापक सन्दर्भ में समझना। (5) रोजमर्रा के जीवन में होने वाले परिवर्तन के कारण और उनके परिणामों की पहचान करना। (6) कक्षा की खोजी और उसके बाहर की दुनिया की परिस्थितियों और घटनाओं के जुड़ाव का विश्लेषण और उस पर लगातार अपनी प्रतिक्रिया देना सीखना।

रचनात्मक नाटक की गतिविधियाँ—(1) नुक्कड़ नाटक : सामाजिक, शैक्षिक, मूल्य आधारित। (2) एकल अभिनय। (3) एकांकी। (4) नृत्य नाटिका। (5) लोक नाट्य। (6) इण्टर्नशिप के दौरान कक्षा शिक्षण के समय पाठ आधारित नाटकों का मंचन छात्रों से करवायें। (7) इण्टर्नशिप के दौरान पाठ पर आधारित कहानियों को नाटक में प्रस्तुत करने छात्रों को प्रोत्साहित करें। (8) नाटकों में तकनीक का उपयोग कर प्रस्तुति करना देना।

इकाई 2 : ललित कला : औचित्य और लक्ष्य—ललित कला का उद्देश्य विभिन्न कलाओं, क्राफ्ट, संस्कृति, सौन्दर्यबोध, स्वास्थ्य और आजीविका के बीच के अन्तर्सम्बन्धों को समझना है। साथ ही लोक कलाओं एवं शास्त्रीय विधाओं का प्रदर्शन और उनका आदान-प्रदान कर कला प्रक्रिया, उत्पाद एवं प्रदर्शनों के विभिन्न आयामों के साथ जुड़ना एवं उन्हें सराहना भी है। कला रूपों के माध्यम से छात्र और शिक्षकों में सौन्दर्यबोध और गुणवत्तापूर्ण जीवन के अनिवार्य पक्ष के रूप में सौन्दर्य एवं सामंजस्य को पहचानने की क्षमता विकसित होती है।

विशिष्ट उद्देश्य—(1) विभिन्न ललित कलाओं की समझ विकसित करना एवं कला शिक्षा से जोड़ना। (2) ललित कला के विभिन्न रूपों की सराहना करना एवं शिक्षा के आधार के रूप में कला को जानना। (3) परम्परागत कला के प्रकारों को समझना और स्वयं कार्य करना। (4) दृश्य कला एवं हस्तकला का उपयोग करते हुए कला कृतियों को बनाना एवं प्रदर्शन करना। (5) मेला/जन उत्सव में विभिन्न कलाओं के प्रदर्शन हेतु प्रोजेक्ट तैयार करना। (6) स्वयं का मूल्यांकन एक कलाकार और कला शिक्षक के रूप में करना। (7) ललित कला के माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने हेतु अवसर प्रदान करना। (8) प्रदर्शनकारी कलाओं की प्रस्तुति हेतु बाल मेला/प्रदर्शनी का आयोजन करना। (9) कला शिक्षा की मौजूदा प्रक्रियाओं की समालोचना करते हुए परिवर्तन के लिये सम्भावित परिदृश्य को विकसित करना।

ललित कला—(1) किसी हस्तकला दीर्घा, कला संग्रहालय, जैसे स्थानों का भ्रमण करना और इस अनुभव के बारे में समूह में चर्चा करना। (2) छोटे समूहों के साथ हस्तकला, जनजातीय कला और संगीत के अभ्यास आयोजित करना तथा उन पर चर्चा करना। (3) विविध कला माध्यमों का उपयोग करते हुए कला कृतियों की रचना करना; जैसे—पानी, कागज, क्रियॉन,

आइल पेंट, केनवास आदि के माध्यम से लाइन, रूप, संयोजन, रंग, स्थान, विभाजन आदि के बारे में सीखना, स्वतन्त्र चित्र बनाना, कोलाज बनाना, चित्रकला बनाना। (4) सिनेमा एक कला के रूप में मूल्यांकन करना, सीखना और हमारे जीवन पर इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रभाव को समझना। (5) सामाजिक एवं शैक्षणिक मुद्दों पर आधारित चर्चित वैकल्पिक फिल्मों को दिखाकर उन पर चर्चा करना। (6) भाषा, साहित्य एवं प्रदर्शन कलाओं से जुड़ाव बनाना, विविध भाषाओं में कविता, कहानी आदि को एकत्रित कर उनका पठन करना। (7) नाटक और साहित्य को पढ़ना और उनका आनन्द लेना। (8) वास्तु विरासत की गहरी समझ विकसित करना। स्थानीय ऐतिहासिक इमारतों का भ्रमण करना और उनमें निहित सौन्दर्यशास्त्र का मूल्यांकन करना।

सत्रगत कार्य—(1) परिवार में प्रचलित ऐसी परम्पराओं की जानकारी एकत्र करें जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही है। (2) अपने अंचल में प्रचलित मांडना, गोदना, मेंहदी, महावर आदि में उपयोग की जाने वाली आकृतियों की सूची बनायें, उनके चित्र एकत्रित करें। (3) अपनी रुचिनुसार मांडना, गोदना, महावर आदि को कॉपी में बनायें। आप उनमें किस तरह की विविधता लाना चाहेंगे ? (4) आपके क्षेत्र में उपस्थित सांस्कृतिक धरोहरों (वास्तुकला या मूर्ति कला के) की सूची बनायें।

बच्चों का शारीरिक, भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा

इकाई 1 : स्वास्थ्य एवं कल्याण की समझ—(1) स्वास्थ्य एवं कल्याण का अर्थ। (2) जीव चिकित्सीय बनाम सामाजिक स्वास्थ्य प्रतिमान। (3) दरिद्रता, असमानता एवं सेहत के अन्तर्सम्बन्ध की समझ। (4) सामाजिक स्वास्थ्य के कारण एवं निर्धारक तत्त्व—स्तरीकृत संरचना, गोजन, आजीविका, ठिकाना, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच।

इकाई 2 : बच्चों के स्वास्थ्य की समझ—(1) स्वास्थ्य और शिक्षा के बीच सम्बन्ध। (2) बाल्यावस्था और स्वास्थ्य, भूख और कुपोषण अर्थ और उपाय, देश और राज्य की स्थिति। (3) मृत्यु/रुग्णता चित्रण—विधियाँ, अवलोकन, दैनिक टिप्पणी। (4) बच्चों के स्वास्थ्य की अनुभूति, स्वयं के स्वास्थ्य के आकलन और समझने की विधियाँ।

इकाई 3 : विद्यालय के सन्दर्भ में बच्चों का स्वास्थ्य—(1) मध्याह्न भोजन कार्यक्रम औचित्य, उद्देश्य, घटक। (2) कार्य पद्धति, कक्षा की जिज्ञासा की अवधारणा। (3) शालेय स्वास्थ्य का मापन—जल, स्वच्छता और शौचालय इत्यादि सम्बन्धी मुद्दे। (4) कार्यक्रमों की संस्कृति की संकल्पना। (5) शिक्षक की भूमिका एवं कार्यक्रम सम्बन्धी वचनबद्धता। (6) बच्चों में भोजन, कार्य, खेल, मध्याह्न भोजन सम्बन्धी बोध।

नोट—प्राचार्य/अध्यापक डी.एल.एड. महाविद्यालय हेतु डी.एल.एड. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष की पाठ्य पुस्तकें व फुल मार्क्स सीरीज नमूनार्थ प्रति मंगवाने के लिये हमारे दिये गये पते पर ई-मेल, ह्वाट्सऐप और पत्र लिखकर सम्पर्क करें।

email: radhaprakashanmandir@gmail.com

Whatsapp No. 7060090210, 7060090201, 7060090212